ISSN 2278-8808 SJIF 2014 = 4.889
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा एवं आयाम

प्रा. डॉ. अमरनाथ शांताराम कुमावत
विद्या प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र)संचलित शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय अहमदनगर.

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

वर्तमान स्थिती

परंपरागत रुप के शिक्षकों को हमारे देश में काफी सम्मानजनक स्थान प्राप्त है । धार्मिक नेताओं और समाजसुधारकों को यहाँ शिक्षक कहकर संबोधित किया गया । विद्यार्थियों व समाज की नजर में अब भी हजारों शिक्षकों को सम्मान प्राप्त है । लेकिन कुल मिलाकर देखा जाय तो पिछले पाँच दशकों में शिक्षकों की प्रतिष्ठा घटी है । इसके पिछे काम में गिरावट, शैक्षिक व्यवस्था में तेजी से विस्तार, शिक्षक शिक्षा के स्तर में गिरावट, यह मान्यता कि बड़ी संख्या में शिक्षक ठीक से आपना काम नहीं करते हैं, समाज की मूल्य व्यवस्था में बदलाव जैसे कारण उत्तरदायी हैं । शिक्षक को देखने का समाज का उदासी नजरिया और शिक्षकों द्वारा अपने काम में लापरवाही के कारण ही शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट आयी है ।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में रणनीतियाँ कार्यक्रम तथा विषयवस्तु के अनुरुप अपनाई जाएँगी । उपयुक्त प्रशिक्षण रणनीति अथवा मिलीजुली रणनीति का विवेकपूर्ण चयन कार्यक्रम की विषयवस्तु, अवधि, प्रतिभागियों की पृष्ठभूमि, विशेषज्ञों की सुलभता, सहयोगी सामग्री तथा प्रशिक्षण के लिए प्रोद्योगिकी की प्राप्यता को ध्यान में रखकर करना होगा । प्रशिक्षण की रणनीतियों का विस्तार व्याख्यान एवं विचार–विमर्श से परियोजना कार्य, पुस्तकालय उपयोग, समूह अन्तक्रिया तथा क्षेत्र भ्रमण तक होगा ।

सेवाकालीन प्रशिक्षण के अनेक मॉडल हो सकते हैं । इनमें से कुछ हैं :

मुखाभिमुख संस्थागत मॉडल : इस मॉडल में प्रशिक्षण संस्थान / प्रत्यक्ष मुखाभिमुखी उपागम का उपयोग का उपयोग करते हुए अपने परिसर में ही सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करता है । यदि प्रतिभागियों की संख्या ३० ते ४० तक हो तो यह मॉडल अत्यंत प्रभावी होता है । व्याख्यान विचार – विमर्श पद्धति के साथ ही अन्य संचालन रणनीतियों, जैसे परियोजना विधि, प्रकरण विधि, पुस्तकालय कार्य, समकक्षी, अधिगम सत्र, गुंजित सत्र तथा अन्य लघु समूह तकनीकों का भी प्रयोग किया जाता है । इस उपागम का गुण यह है की इसके द्वारा प्रतिभागियों तथा विशेषज्ञ के बीच प्रत्यक्ष तथा संघृत अन्योन्यक्रिया होती है । इस उपागम की सीमा यह है कि यदि अल्प अवधि में बहुत अधिक प्रतिभागियों की संख्या द्वारा प्रशिक्षण प्रदान करना हो तो इसका उपयोग नहीं किया जा सकता ।

सोपान मॉडल : इस मॉडल में बहुत अधिक संख्या में लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण अभिकल्प का निर्माण दो या तीन स्तर व्यवस्थाओं पर करना पडता है । प्रथम स्तर तर प्रमुख विशेषज्ञों को प्रशिक्षित किया जाता है जो पुनः विशेषज्ञों को प्रशिक्षण देते हैं, अन्त में ये विशेषज्ञ अध्यापकों को प्रशिक्षित करते हैं । इस मॉडल का लाभ यह है कि थोडी समयावधि में बहुत अधिक संख्या में अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा सकता है । यद्यपि इसकी अपनी सीमाएँ हैं । जो ज्ञान तथा सूचनाएँ प्रथम स्तर पर प्रमुख विशेषज्ञों को प्रदान की जाती हैं वे दूसरे स्तर के विशेषज्ञों तक पहुँचने में अवमिश्रित हो जाती हैं जिसके परिणामस्वरुप प्रशिक्षण की प्रभावशीलता में संप्रेषण की हानि होती है ।

संचार माध्य आधारित दूरस्थ शिक्षा मॉडल

उपग्रह प्रौद्योगिकी तथा कॉम्प्यूटर के आगमन से अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम से चलाए जा रहे हैं । ऑडियो कॉन्फ्रेसिंग तथा टेलिकॉन्फ्रेसिंग का उपयोग होने लगा है । इनमें इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम प्रमुख भूमिका का निर्वाह करता है तथा मुद्रित सामग्री सहयोगी भूमिका का । इस मॉडल के लाभ यह है की प्रशिक्षण के उद्देश्य कुछ सीमित समय में ही प्राप्त किए जा सकते हैं । किंतु इस उपागम में बाध्यता यह है कि प्रौद्योगिकी की उपलब्धता सीमित है तथा आरंभिक लागत बहुत ऊँची है ।

ऊपर विवेचित तीन मॉडलों के अतिरिक्त कुछ अन्य महत्वपूर्ण विचार भी सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने में सहायक होते हैं । ये है :

१) **स्थल –** राष्ट्र, राज्य तथा जिला स्तर पर सामान्यतया प्रशिक्षण कार्यक्रम उनकी अपनी संस्थाओं में आयोजित किए जाते हैं । ये संस्था आधारित प्रशिक्षण संसाधनों की सुलभता की दृष्टि से शक्ति संपन्न भी होते हैं । कमी यह है कि इनके प्रतिभागियों को अपना कार्यस्थल छोड़ना पड़ता है । इस उपागम को कार्यस्थल विलग उपागम कह सकते हैं । दूसरी और अनेक संस्थाएँ कार्यस्थल संलग्न उपागम का उपयोग करते हुए विद्यालय में ही प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती हैं । इस प्रकार प्रतिभागी अपने कार्यस्थल से अलग नहीं होते । विस्तार कार्यक्रम तथा स्थल संलग्न कार्यक्रम प्रशिक्षण को विद्यालय/संस्था तक पहुँचा देते हैं ।

२) **लक्ष्य समूह –** वर्तमान समय में सेवाकालीन कार्यक्रम अधिकतर अध्यापकों के लिए ही नियोजित किए जा रहे हैं । कुछ कार्यक्रम प्रधान अध्यापकों, प्राचार्यों तथा अन्य अधीक्षण कर्मचारियों के लिए भी नियोजित किए जा रहे हैं । इस घेरे को विस्तार देना होगा तथा अन्य बहुत से वर्गों के कर्मचारियों को इसके अंतर्गत समाहित करना होगा । सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, प्रारंभिक, माध्यमिक, तथा उच्चतर माध्यमिक स्तरों के सभी अध्यापकों को सम्मिलित करना होगा । औपचारिक विद्यालय, औपचारिकेतर केंद्र, खुली तथा दूरस्थ अध्यापन संस्थाएँ और शारीरिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, विशेष शिक्षा आदि संस्थाओं के अध्यापकों को भी इस प्रकार के कार्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिए ।

सामान्यतः अध्यापक शिक्षकों के लिए सेवाकालीन शिक्षा के अवसर सीमित हैं । सभी स्तर के अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है । वास्तव में अध्यापक शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु एक शिखर संस्था स्थापित करने की आवश्यकता है । विकल्पतः कुछ चुनी हुई संस्थाएँ अध्यापक शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु विशेष विशेषज्ञता विकसित कर लें । ऐसी संस्थाओं को संबंद्ध आधार सामग्री का विकास करना होगा तथा अध्यापक शिक्षकों के सेवारत कार्यक्रमों से संबंधित आलोचनात्मक शोध अध्ययन करने होंगे ।

अध्यापकों, पर्यवेक्षकों तथा प्रशासकों के अतिरिक्त पंचायती राज व्यवस्था से जुड़े हुए कुछ अन्य श्रेणियों के लोग जैसे जिला प्रमुख, प्रधान, सरपंच आदि भी हैं जो प्राथमिक स्तर की शिक्षा की देखभाल के लिए उत्तरादायी है । संसाधनों की उपलब्धता की दृष्टि से आधार व्यवस्था के कर्मचारी जैसे पुस्तकालय अध्यक्षों, छात्रावास के वार्डनों आदि को अपनी व्यावसायिक क्षमता बढ़ाने के विए विविध कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिलना चाहिए ।

३) **संचालन रणनीतियाँ –** प्रभावी सेवाकालीन शिक्षा तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम अनेक संचालन रणनीतियों का प्रयोग करता है, जैसे व्यक्ति अध्ययन प्रणाली, विचारवेश सत्र, नामिका, परिचर्चा, विचारगोष्ठी, परिसंवाद, लघुसमूह तकनीक, परियोजना कार्य, पुस्तकालय कार्य, पुस्तकालय कार्य तथा व्याख्यान एवं विचार विमर्श सत्र आदि । सेवारत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के आयोजक तथा विशेषज्ञ इसे अधिक प्रभावशाली तथा रुचिकर बना सकते हैं यदि योजना प्रावस्था में प्रतिभागियों की आयु, अनुभव तथा पृष्ठभूमि का समुचित उपयोग किया जाए । सेवारत प्रतिभागी अत्याधिक अनुभवी होते हैं तथा शैक्षिक घटनाओं के प्रति अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण रखने के कारण कार्यक्रम के रुपांकन तथा विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं ।

४) **विषयवस्तु –** सेवाकालीन कार्यक्रमों की विषयवस्तु प्रत्येक कार्यक्रम के उद्देश्यों पर निर्भर करेगी जिन्हें निम्नलिखित प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ।

– विद्यालयी विषय ;

– शिक्षणशास्त्र तथा कार्यप्रणाली ;

– उभरते हुए मुद्दे ; तथा
– अध्यापक की नई भूमिका

दक्षताओं तथा प्रतिबद्धता का विकास ही सेवाकालीन कार्यक्रमों का लक्ष्य है । सेवाकालीन कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य अध्यापकों को अपनी कक्षा तथा कक्षा के बाहर के क्रियाकलापों, विद्यालय तथा समुदार की गतिविधियों को विकसित करने की योग्यता प्रदान करना है ।

५) **मूल्यांकन तथा अनुवर्तन** : अनेक सेवाकालीन कार्यक्रमों का मूल्यांकन उनका एक दुर्बल पक्ष है । प्रायः अधिकतर कार्यक्रमों का मूल्यांकन केवल तदर्थ आधार पर होता है । परिवीक्षण प्रत्येक सेवारत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का अंगभूत घटक होना चाहिए जिससे कार्यक्रम की प्रभावोत्पादकता का समुचित मूल्यनिर्धारण तथा समीक्षा की जा सके । कार्यक्रम मूल्यांकन के द्वारा यह निर्धारित करना चाहिए की कार्यक्रम के लिए आवश्यक निवेश समयानुसार मिल सके, संभारतंत्र की उचित देखभाल तथा समन्वयन किया गया, प्रतिभागियों को पठन सामग्री प्रदान की गई आदि । कार्यक्रम मूल्यांकन का दूसरा पक्ष यह होना चाहिए कि प्रत्येक प्रतिभागी की उपलब्धि का निर्धारण किया जाए साथ ही एक अन्य सूक्ष्म पक्ष है– प्रभाव का मूल्यांकन अर्थात् आधार स्तर पर तथा क्षेत्र स्थिति में कार्यक्रम के प्रभाव का निर्धारण किया जाए । किसी सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में सफलता का निर्धारण प्रतिभागी तथा विशषज्ञों के अनुभव तथा प्रतिक्रियाओं के संकलन द्वारा भी किया जा सकता है । निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर गुणवत्ता को सुनिश्चित करने की एक व्यापक दृष्टि प्राप्त की जा सकती है ।

– कार्यक्रम किस प्रकार कार्यान्वित किया गया है ?
– इसका संदर्भ क्या है ? क्या कार्यक्रम वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में सार्थक है ?
– उद्देश्य, अवधि तथा संसाधनों की दृष्टि से क्या कार्यक्रम का नियोजन यथोचित ढंग से किया गया है ?
– क्या कार्यक्रम के द्वारा सभी या अधिकतर प्रतिभागियों की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है ?
– क्या कार्यक्रम में लागत प्रभावशीलता है ?

भविष्य के लिए दिशानिर्देश

शिक्षा तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम अधिक उत्पादक तथा प्रभावशाली हो जाते हैं यदि कार्यक्रम नियोजन में सहभागी तथा कार्य संपादन रणनीतियाँ अन्योन्यक्रियात्मक हैं । सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की आवश्यकता निचले स्तर से उभरनी चाहिए । उदाहरण के लिए केंद्र समर्थित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत जिला शिक्षा तथा प्रशिक्षण संस्थानों से अपेक्षा की जाती है कि वे अध्यापकों के लिए कार्यक्रम इस प्रकार आयोजित करेंगे कि प्रत्येक प्रारंभिक अध्यापक पाँच वर्ष में एक बार अपनी रुचि के कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर पा जाए । इस महत्वपूर्ण प्रयास में राज्य स्तर का समन्वयी अभिकरण, जैसे एस.सी.ई.आर.टी. यह सुनिश्चित करने के लिए कि केवल आवश्यकता आधारित सेवाकालीन कार्यक्रम ही आरंभ किए जाएँ, एक सुगमीकृत तथा समनावीकृत भूमिका अदा कर सकता है । कुछ राज्यों में कुछ कारणवश तथा अन्य प्रतिफलों के कारण अप्रशिक्षित तथा अल्पयोग्यता वाले अध्यापकों की नियुक्ति हो जाती है । इन अप्रशिक्षित तथा अल्पयोग्यता वाले अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण तथा विषयवस्तु उन्नयन आवश्यक हो जाता है । इन अप्रशिक्षित तथा अल्पयोग्यता वाले अध्यापकों की कमियों को शीघ्रतिशीघ्र पूरा करना है ।

जब कभी प्रारंभिक स्तर के अध्यापक माध्यमिक स्तर पर या माध्यमिक स्तर के अध्यापक उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पदोन्नति प्राप्त करते हैं, उनके लिए गहन सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम रुपांकित तथा प्रस्तावित किए जाने चाहिएं । जब कभी एक अध्यापक कोई नया शैक्षिक दायित्व, जैसे प्रधानाध्यापक अथवा प्राचार्य के पद पर कार्यरत होता है, उसे नियत कार्य अभिविन्यस्त सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी ।

कार्यक्रमों को संगठित करने में प्रशिक्षण संस्थाओं से विद्यालय तथा विद्यालय समूहों में स्थान परिवर्तन की आवश्यकता है । इस दिशा में सम्मिलित प्रयास किए जा सकते हैं ।

सेवाकालीन शिक्षा के लिए आधार सामग्री का विकास बहुत आवश्यक है । जब तक उच्च कोटि की आधार सामग्री विकसित नहीं हो जाती, अकेले मुखाभिमुख प्रशिक्षण काफी नहीं है । मुद्रण, वीडियो कैसेट तथा कम्प्युटर कार्यक्रम के रुप में अच्छे किस्म की आधार सामग्री को रुपांकित, विकसित तथा प्रसारित करना होगा ।

कुछ सेवाकालीन कार्यक्रम क्रेडिट अभिमुख बनाने होंगे । निर्दिष्ट कार्यक्रमों के सपलतापूर्व समापन पर प्रतिभागियों की व्यावसायिक गतिशीलता पर विचार किया जा सकता है ।

एक अनुबद्ध अवधि के अंतर्गत सेवाकालीन कार्यक्रम में प्रतिभागिता अनिवार्य बना देनी चाहिए । ऐसा करने के लिए समुचित प्रोत्साहन पर भी विचार किया जा सकता है ।

सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के संगठन हेतु चलती–फिरती प्रशिक्षण टीम पर भी विचार किया जा सकता है ।

उद्धृत दस्तावेजों की सूची

गवर्नमेंट ऑफ इंडिया (१९४८–४९) रिपोर्ट ऑफ द यूनिवर्सिटी एजुकेशन कमीशन, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन कमीशन, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन, न्यू देहली।

यूनिवर्सिटी ग्रांटस् कमीशन (१९६३) कमिटी ऑन एजुकेशन एज.एन. इलेक्टिव सब्जेक्ट एट द अंडर ग्रेजुएट स्टेज यू.जी.सी., न्यू देहली ।

गवर्नमेंट ऑफ इंडिया (१९८३) रिपोर्ट ऑफ द वर्किंग ग्रुप टू रिवायू टीचर ट्रेनिंग प्रोग्राम (इन द लाईट ऑफ द नीड फॉर वैल्यू–ओरियेन्टेशन)मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन एंड कल्चर, न्यू देहली ।

गवर्नमेंट ऑफ इंडिया (१९८६) नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन, न्यू देहली, मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डेवपमेंट डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन ।

गवर्नमेंट ऑफ इंडिया (१९८८) नेशनल करीक्यूलम फॉर टीचर एजुकेशन, : नेशनल काऊंसिल फॉर टीचर एजुकेशन, डिपार्टमेंट ऑफ टीचर एजुकेशन, न्यू देहली ।